डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था

Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

एक शाम आलोचक के साथ

गाँधी निर्गुण भारतीय काव्य का आधुनिक सगुण भाष्य हैं – गोपेश्वर सिंह
गाँधी ने 'डिग्निटी ऑफ लेबर' को कायम किया – गोपेश्वर सिंह
गाँधी मूलतः मनुष्यधर्मी और 'सनातन सत्यों के आधुनिक प्रयोगकर्ता' थे – राजीव रंजन गिरि
गाँधी ने अपने दर्शन को 'वाद' के रूप में प्रचलित होने का पक्ष कभी नहीं लिया –राजीव रंजन गिरि

नई दिल्ली। 29 जून 2018। साहित्य अकादेमी सभागार में 29 जून 2018 को सायं 5.00 बजे 'एक शाम आलोचक के साथ' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित आलोचक तथा गाँधीवादी लेखक राजीव रंजन गिरि और हिंदी के प्रतिष्ठित समालोचक एवं लेखक गोपेश्वर सिंह को आमंत्रित किया गया।

राजीव रंजन गिरि ने 'गाँधीदर्शन और वाद' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में महात्मा गाँधी के विचारों का परिप्रेक्ष्य और उनकी निर्मिति के आधार को प्रस्तुत किया। उन्होंने एक बिंब के माध्यम से कहा कि स्वाधीनता आंदोलन भी एक समुद्र मंथन की तरह था जिसका अमृत तो सभी पीना चाहते थे पर विष पीने वाला कोई नहीं था। स्वाधीनता आंदोलन के समुद्र मंथन से निकले विष को गाँधी ने पीया। उन्होंने अपने वक्तव्य में गाँधी के प्रति चार परस्पर विरोधी मतों को भी साक्ष्य के तौर पर प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गाँधी ने भारतीय वाङ्मय और प्राचीन जीवन से सत्य और अहिंसा जैसे अनमोल 'सत्यों' को प्राप्त किया था। राजीव रंजन गिरि ने 'भिन्न सत्यों की बहुल परंपरा' के परिप्रेक्ष्य में गाँधी जी के उद्गार को प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वयं गाँधी जी ने माना था कि उन्होंने 'प्राचीन सत्यों पर मात्र नई रोशनी डाली है'। राजीव रंजन गिरि ने कहा कि गाँधीदर्शन में गत्यात्मकता है। जहाँ गति होगी, परिवर्तन भी होगा। इसलिए उसमें परिवर्तनशीलता भी है। गाँधी बदलती परिस्थितियों के हिसाब से विचार बदलने में हिचकते नहीं थे। करणीय और अकरणीय का जाग्रत विवेक था उनके पास। पहले कोई बात कह दी, इसलिए सदा उसका बचाव करना है इसे ठीक नहीं मानते थे। पूर्ववर्ती विचार की कमी का अहसास होते ही उसे नूतन समझ से परिवर्तित कर लेते थे। इसीलिए गाँधी मूलतः मनुष्यधर्मी और 'सनातन सत्यों के आधुनिक प्रयोगकर्ता' थे। महात्मा गाँधी ने अपने प्राप्त सत्यों और दर्शन को 'वाद' के रूप में प्रचलित होने का पक्ष नहीं लिया बल्कि 'गाँधीवाद' को अपने लेखों और वक्तव्यों में नष्ट होने की ही कामना की।

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

'भक्ति साहित्य और गाँधी' विषयक अपने आलेख में गोपेश्वर सिंह ने गाँधी के व्यक्तित्व और विचारों के निर्माण में भारतीय भक्ति साहित्य और विशेषकर भारतीय भक्ति कविता की बड़ी भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि गाँधी का अंतःकरण भक्ति काव्य के उदात्त जीवनमूल्यों, सर्वमंगल की कामना, श्रम और मनुष्यता से निर्मित हुआ है। उन्होंने नरसी मेहता, कबीर, तुलसीदास के काव्यालोक में गाँधी के चिंतन की सूक्ष्म व्याख्या प्रस्तुत की। गोपेश्वर सिंह ने कहा कि गाँधी का यदि बचपन में 'रामनाम' और 'भक्ति साहित्य' से परिचय और बाद में उसकी महत्ता का ज्ञान न हुआ होता तो मोहनदास करमचंद गाँधी और कुछ भी हो सकते थे लेकिन 'महात्मा गाँधी' न बन पाते। उन्होंने कहा कि गाँधी ने कबीर से चरखा मात्र प्रतीक के रूप में नहीं लिया था बल्कि उसे भारतीय जन के स्वावलंबन के एक असाधारण औजार के रूप में प्राप्त किया था। उन्होंने कहा कि आधुनिक भारत में गाँधी ने 'डिग्निटी ऑफ लेबर' को कायम किया। उन्होंने कहा कि जब साहित्य एक बड़े विचार की कल्पना करता है तब ही कोई व्यक्ति अपने जीवन के द्वारा उस कल्पना को यथार्थ बना पाता है जैसा कि हम रवींद्रनाथ टैगोर के 'एकला चलो रे' की कल्पना को देखते हैं और गाँधी जी के जीवन में इस कल्पना को यथार्थ रूप लेते हुए पाते हैं। गोपेश्वर सिंह ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में कहा कि 'गाँधी निर्गुण भारतीय काव्य का आधुनिक सगुण भाष्य' हैं। 'श्रम, संन्यास एवं गार्हस्थ का जो संयोजन कबीर में हम देखते हैं वही हम गाँधी जी के जीवन में भी पाते हैं'।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी और छात्र उपस्थित थे।

ह./–

(के. श्रीनिवासराव)